ट्रेन में सैक्स

हैलो, दोस्तो

मेरा नाम रोहित शर्मा है और यह मेरी दूसरी कहानी है। मैने अन्तरवासना में बहुत सी कहानी पढी कई अच्छी लगी और कई कोरी बकवास लगी। मैं आपको अपने जीवन की सच्ची कहानी सुनाता हूँ। यह कोई झूठी कहानी नहीं।

जैसा कि आपको पता होगा कि मेरा पूरा नाम रोहित शर्मा है तो दोस्तो मुझे बचपन से ही घूमने का बहुत शौक रहा हैं हमारे परिवार में किसी की भी शादी, गोठ या किसी भी प्रोग्राम का कार्ड आता और प्रोगाम कही बाहर का होता तो सबसे पहले मैं ही जाने को तैयार रहता इसके अलावा भी कही–ना–कही जाता ही रहता था जैसे मेरी दीदीयों (मामा की लडकियों के) अपने नाना के और कई जगहों पर।

यह कहानी शुरू होती हैं :– मेरे मामा के लडकें की शादी थी जो कि मथुरा रहते है। चूंकि शादी थी और बाहर जाना था तो हमारे घर में सबसे पहले मैं ही तैयार हुआ। मेरी मम्मी को बस में उल्टीयां होती है इसलिये मेरी मम्मी ट्रेन का सफर करती है उन दिनों दोपहर 1.30 पर मरूथर एक्सप्रेक्स मथुरा के लिये जाती थी यह ट्रेन अक्सर खाली सी जाती थी ज्यादा भीड नहीं होती थी तो हम निर्धारित समय पर ट्रेन पर सवार हो गये मेरी मम्मी ट्रेन में चढते ही नीचे वाली सीट पर सो गई मेरे सामने वाली सीट और उपर वाली सीटे और हमारे पूरे डिब्बे में गिनती के 5–8 सवारी थी तथा हमारे वाले हिस्से में तो कोई भी नही था तथा हमारा हिस्सा बाथरूम के बिल्कुल पास था। ट्रेन अपने निर्धारित समय से 15 मिनट लेट चली और गांधी नगर रेल्वे स्टेशन पर आकर रूकी तब भी मेरे सामने वालीं और उपर वाली सीट पर कोई भी नहीं चढा जैसे ही ट्रेन चलने वाली थी तभी एक परिवार ट्रेन में चढा जिसमें एक बूढी औरत एक जवान औरत और एक आदमी था वह मेरी सामने वाली सीट पर ही आकर बैठ गये उसमें से वह आदमी जो लगभग 30 से 35 साल का बदसूरत सा लग रहा था वह उपर वाली सीट पर जाकर सो गया बूढी औरत जो लगभग 60 से 65 साल की बीमार सी लग रही थी नीचे वाली सीट पर जवान औरत जो लगभग 20 से 22 साल जो कद–काठी से आकर्षक लग रही थी की जांघ पर सो गई मैने भी अपनी मम्मी को अपनी जांघ पर ही सुला रखा था और मैं और वो जवान औरत दोनो खिडकी के पास वाली सीट पर ही बैठ थे। सफर मैं मुझ से चुप नहीं बैठा जाता है तो मैं मौके की तलाश में लग गया कि कब उससे बात करू और तकरीबन 15–25 मिनट बाद मुझे मौका मिला वो जवान औरत के जांघों में दर्द हो गया तो वह कुछ देर के लिये खडी हो गई उसे बूढी औरत की शायद तबीयत खराब थी तभी मैंने मौका देखकर उसे जवान औरत से कहा कि अगर आप थक गई है तो मैं इनको अपनी जांघ पर सुला लेता हूँ पहले तो उसने मना कर दिया पर मेरे ज्यादा जोर देने पर वह मान गई मैंने अपनी मम्मी के सिर के नीचे बैग लगा दिया तथा वह मेरी मम्मी के पास ही बैठ गई तब वह बोली मैं बहुत थक गई थी बस फिर क्या था बात चल पडी सबसे पहले मैंने उससे पूछा कि वह कहा जांऐगे तब वह बोली कि हम कोसी कला जाऐगे (कोसी कला मथुरा से 45 किलोमीटर दूर एक शहर है।) तथा मथुरा तक वह ट्रेन से उसके बाद कोसी कला बस द्वारा जावेगे। उसके बाद उसने बताया कि उसकी शादी कोसी कला में ही हुई तथा वह जयपुर उसके पति की बहन के लडके की शादी में आये थे तथा मैं जोधपुर की रहने वाली हूँ। उसके बाद मैने उसका नाम पूछा तो उसने बताया कि उसका नाम कविता हैं तथा वह बूढी औरत उसकी सांस तथा जो उपर सो रहा है वह उसका पति है। बात सर्दीयों की थी हमने खिडकीयां बन्द कर रखी थी पर थोडी गर्मी होने से मैने खिडकी खोल दी खिडकी खोलते ही जो नजारा मैने देखा उसे मैं देखता ही रहे गया जैसे ही मैंने खिडकी खोली तो हवा से उसके सिर पर से घूघंट हट गया और उसका असली रूप मेरे सामने आ गया गोल, पर तिखी आंखे, मासूम और लम्बा पर आकर्षक चेहरा, गोरा रंग, गोल औरे बडे बूब्स, छरहरा बदन, उसकी बालों की लटे उसके चेहर पर आ रही थी जिससे ऐसा लग रहा था मानों चांद बादलों में छुप गया हों, उसने अपने होठों पर हल्के कलर की ब्राउन लिपिस्टिक लगा रखी थी जो उसके रूप में चार–चांद लगा रही थी। बस उसको देखा और देखता ही रह गया मेरे मन मैं उसके लिये कोई गलत भावना पैदा नहीं पर एक ही सवाल पैदा हुआ कि इतनी मासूम औरत के साथ ऐसा बदसूरत पति पहली बार किसी के लिये यह दिल दुखा और उसके बाद हमारी बातों का सिलसिला चल पडा बातो–बातों में वह मुझसे काफी खुल चुकी थी। उसे मेरा नाम पूछा मैं क्या करता कहा रहता हू और हम कहा जा रहे है। बातों–बातों में जब वह अपनी लटों को अपने चेहरे से हटाती तो मानों ऐसा लगता जैसे चांद बादलों से बाहर आ गया हो, बातो–बातों में ही मैंने उसका कहा कि वह बहुत खूबसूरत हैं तथा आपके पति काफी खुशनसीब है जो आप जैसे की खूबसूरत और अच्छी पत्नी मिली। तो वह हसने लगी और बोली आप भी कम नही हो आप एक अच्छे इन्सान हो जो मेरी मजबूरी को समझ कर मेरी मदद की वरना आज कौन किस की मदद करता है। तब मैनें हिम्मत करके उससे पूछे ही लिया कि क्या उसकी शादी उसकी रजामंदी से हुई है तो वह यह सुनकर रोने लग गई और बोली कि उसकी शादी उसकी रजामंदी से नहीं हूँ मैं तो और पढना चाहती थी परन्तु उन दिनों मेरे दादा जी की तबीयत बहुत खराब रहती थी तथा वह मरने से पहले मुझे दुल्हन के रूप में देखना चाहते थे, मैं अपने दादा से बहुत प्यार करती थी तथा मेरे ससुर और मेरे दादा बहुत पुराने दोस्त थे तथा बचपन में ही उन्होने हमारा रिश्ता तय कर दिया था तथा मजबूरीवश मुझे मेरी उम्र से दुगुने बडे लडके से शादी करनी

पडी। हमारी शादी के 6 महीने बाद भी मेरे पति ने मेरी भावनाओं को कभी नहीं समझा उन्होने यह कभी ना सोचा कि एक औरत अपने पति से क्या चाहती इतना कहते ही कविता के आंसू और भी तेजी से निकल रहे थे। मुझसें उसका रोना नही देखा गया तथा मैंने हिम्मत करके उसके चेहरे को पकडा तथा उसके आसू पौछे इसके बाद हम दोनों खडे होकर ट्रेन के गेट पर आ गये तथा वह लगातार रोती जा रही थी मैने उसको अपनी बाहों में भरकर दिलासा देने की कोशिश की परन्तु जैसे ही उसके शरीर का स्पर्श हुआ और मेरे शरीर में एक अजीब सी तंरग दौड गई तथा उसके बाद वह चुप हो गई और गेट पर ही बैठ गई तथा मैं भी उसके पास ही बैठ गया उसके बाद मैने उससे कहा कि अगर आप शादीशुदा नहीं होती तो मैं आपसे यही शादी कर लेता इतना सुनते ही वह जोर–जोर से हसने लगी और मैने कहा अरे हां मैं सही कह रहा हूँ क्योंकी आप इतनी मासूम और खूबसूरत और अच्छी हो की कोई भी लडका आपसे यही तुरन्त ही शादी कर लेगा और जो आप को पहली बार जो देख ले उसको वही आप से प्यार हो जाऐगा। फिर कविता ने कहा कि क्या तुम मुझसे प्यार करने लगे हो तो कुछ देर के लिये मैं चुप हो गया तब कविता बोली बताओं क्या तुम मुझसे प्यार करते हो, मैने तुम्हारी आंखों में अपने लिये प्यार देख रही हूँ, जब तुमने मुझे अपनी बाहों में लिया तो मुझे एक सुखद अहसास हुआ। बोलो क्या तुम मुझसे प्यार करने लगे हो मैने कहा हां मैं तुमसे प्यार करता हूं इतना कहते ही वो मेरी बाहों में आ गई। उसके बाद मैंने अपने हाथों से उसकी चेहरे की लटे हटाई तथा उसके कापते होठों पर अपने होठ रख कर उसके होठों को चूसना शुरू कर दिया तथा उसको अपनी गोद में उठाकर बाथरूम में ले गया तथा बाथरूम की दीवार के सहारें लगा कर उसको चूमना शुरू कर दिया तथा अपने दोनों हाथों से उसके बूब्स जोर–जोर से दबाने लगा तथा उसका ब्लाउज खोल दिया ब्लाउज खोलते ही उसके बूब्स देखकर मैं पागल हो गया क्योंकी उसके बूब्स बहुत ही गोल तथा सैक्सी तथा गोरे थे मैं उन पर टूट पडा और अपना मुंह पूरा उसके बूब्स में डाल दिया तथा वह भी मुझे पूरा सहयोग दे रही थी। उसके शरीर में एक गजब का आकर्षण था। उसने मुझे सर से पांव तक चूम लिया तथा मेरे होठों को अपने होठों से अन्दर बाहर कर रही थी इन सब से यह लग रहा था कि उसके अन्दर बहुत प्यार है जो उसका पति कभी नही समझ पाया। ट्रेन में होने की वजह से व किसी के आने के डर के कारण मैने कविता को डोगी स्टाईल में करके उसकी चूत पर लण्ड रख कर जैसे ही धक्का मारा तो मेरा आधा लण्ड उसकी चूत में घुस गया और उसके मुह से हल्की से चीख निकल गई तथा दूसरे धक्के में मेरा पूरा लण्ड उसकी चूत में घुस गया तथा कविता ने भी आगे–पीछे होकर मेरा पूरा साथ दिया। ट्रेन में होने की वजह से घबराहट व सही सन्तुलन नहीं बन पाने की वजह से मेरा 2–3 तीन धक्कों में ही वीर्य उसकी गर्म चूत में छूट गया।

ट्रेन के बाथरूम में चुदाई करने के बाद भी मुझे पूर्ण सन्तुष्टि नहीं मिली और जैसा कि मुझे लग रहा था कि कविता को भी पूर्ण सन्तुष्टि नहीं मिली। चुदाई करने के बाद कविता मुझसे लिपट गई जिसकी वजह से उसके गोल बुब्स मुझसे टकरा गया और मेरी दुंबारा इच्छा हो गई परन्तु ट्रेन में होने की वजह से व किसी ओर के आ जाने की वजह से मैने उससे कहा कि अब हमको चलना चाहिऐ। फिर उसने मुझसे कहा कि रोहित मेरी इच्छा पूर्ण नहीं हुई मैं आपसे ओर चुदवाना चाहती हूँ। आप मथुरा में कब तक हो तो मैने कहा कि मैं मथुरा में अपने मामाजी के लडके की शादी में आयां हूं और मैं मथुरा में 10 से 15 दिन तक ठहरूगा। तब कविता ने कहा कि आज से ठीक 5 वे दिन मेरे पति की बहिन की शादी है। तो आप मेरी सास व पति से काफी घुलमिल जाओं जिससे वह आपको मेरी ननद की शादी में आने के लिये निमन्त्रण दे। उसके बाद मैंने उससे कहा कि आप पहले जाओं और अपनी सीट पर बैठे जाओं उसके बाद मैं आउंगा जिससे किसी को शक भी नहीं होगा। उसके बाद कविता अपनी सीट पर जा कर बैठ गई उसके 10 मिनट बाद में भी अपनी सीट पर आकर बैठ गया। जब तक उसका पति नीद से जाग चुका था तथा उसने कहा कि कहा गई तो कविता बोली कि मैं बाथरूम में मुह–हाथ धोने गई थी। फिर उसकी सास की तबीयत भी काफी सही हो गई तथा वह भी अपनी सीट पर बैठ गई तथा मेरी मम्मी भी अपनी सीट पर बैठ गई तथा उसकी सास से बात करने लगी कि आप कहा जाओंग कहा के रहने वाले हो इत्यादि तथा यहा मेरी और कविता की निगाहें लगातार एक–दूसरे को देखे रही तथा उसकी तिखी आंखें मेरी दिल तक में उतर रही थी तथा उसके एक पांव मेरे पांव से टकरा रहा था जिसकी वजह से मेरा लौडा पूरा तन चुका था। उसका पति नीचे आकर अपनी मम्मी के पास बैठे गया तथा उसके बाद मैं कविता के पति के साथ बाते करने लग गया तथा बातों–बातों में हम सब काफी घुल मिल गये तथा बातो ही बातों में कविता के पति ने मुझे अपने मोबाइल नम्बर दिया। मैने बहुत कोशिश की वह अपनी बहन की शादी के लिये मुझे निमन्त्रण दे पर ऐसा नहीं हो पाया और जैसे मथुरा का स्टेशन आया वैसे ही मेरे दिल की धडकन तेज हो गई और कविता का चेहरा उतर गया बहुत कोशिश के बाद भी उन्होने हमकों शादी में आने के लिये नहीं कहा तथा मथुरा के स्टेशन पर हम सब उतर गये तथा हमारे पास एक बैग होने की वजह से कविता का एक छोटा बैग मैने ले लिया तथा हम स्टेशन से बाहर आ गये तथा मेरे नाना जी का घर बस स्टेण्ड के पास होने की वजह से हम सब एक ही (डबल आटो) आटों में एक साथ बैठ गये तथा बस स्टेण्ड की तरफ रवाना हो गये आटों में मैं और कविता पीछे वाली सीट पर बैठ गये और कविता का पति और उसकी सास और मेरी मम्मी आगे वाली सीट पर बैठ गये तथा कविता ने अपना हाथ से मेरा हाथ पकड रखा था तथा उतावली आखों से मेरी आखों में देख रही थी तथा कभी मेरे हाथ को पकडती कभी मेरे तन हुये लोडे को पकडती इस तरह से बस स्टेण्ड आ गया और वह कोसी की बस में बैठ कर चल गये तभी बस जाने के बाद मैने देखा कि कविता का एक छोटा बैग जो मेरे पास था वह मेरे पास ही रह गया मैं बस के पीछा दौडा पर

बस काफी रफ्तार से निकल चुकी थी। इसके बाद मैं और मम्मी मामा जी के घर चले गई तथा तकरीबन 1 घण्टे बाद मैने कविता के पति को फोन किया कि आप का बैग हमारे पास ही रह गया तो वह बोला कि हम तो यहा शादी के चक्कर में यहा आते ही व्यस्त हो गये और कल संगाई है इसलिये आप यहा आ जाये सगाई में भी शामिल हो जाना और बैग भी दे देना। बस जो मैं चाहता था वो ही हुआ मैं मेरे मामाजी की शादी के प्रोगाम में अभी पांच–छः दिन बाकी थे तो मैं अपनी मम्मी को बोलकर अगले तीन सुबह–सुबह ही कोसी की बस में बैठ गया तथा कविता के पति ने जो पता दिया था उसके हिसाब से में कविता के घर पर पहुच गया तथा घर का गेट भी कविता ने ही खोला तथा मुझे देखकर वह बहुत खुश हुई तथा उसने मुझे अन्दर आने को कहा तभी उसका पति आ गया तथा मैंने बैग कविता के पति को देकर कहा कि अब मैं जाता हूं तो वह बोले आप को तो शादी पूरी करके ही जाना पडेंगा मैंने कहा कि मेरे मामाजी की शादी भी है तो वे बोले कि एक–दो दिन के लिये चले जाना हम तो आपको शादी पूरी करके ही भेजेगे, बस जो मैं और कविता चाहते थे वही हुआ। ज्याद जोर देने पर मैं वही रूक गया और मम्मी को फोन कर दिया।

सगाई के लिये मेहमान आना चालू हो गये थे। कविता के पति ने कहा कि रोहित को घर दिखा दो और उपर वाले कमरे में रूका दो और कपिल के कपडे (कपिल कविता का देवर है) दे दो। तब कविता ने मुझे अपना घर दिखाया उनका घर दो मजिल का एक आलीशान घर था नीचे तथा उपर कुल 8 कमरे थे व 6 किचन–बाथरूम आदि थे तथा छत के एक कोने पर एक स्टोर रूम भी था जिसमें उनकी गेंहू की बोरियां घर का और कई सामान वगैरह रखा रहता था। घर दिखाते समय कविता ने मुझे बताया कि मेरे पति के तीन भाई और एक बहन है। मेरे पति सबसे बडे है उनसे छोटा भाई हमसे अलग मथुरा में ही रहता है और उसकी शादी हमारे साथ ही हुई थी और सबसे छोटा पढाई के लिये गुडगांव गया हुआ हैं तथा इनकी बहन की आज सगाई है। घर दिखाने के बाद कविता मुझे उपर वाले रूम में ले गई तथा रूम में जाते ही मैंने कविता को अपनी बाहों में भर लिया और जोर–जोर से उसके बुब्स दबाने लगा तथा उसको चूमने लगा जिससे मेरा लौडा तन गया तब कविता बोली कि कोई आ जावेगा और आप मेरी चुदाई का पूरा आनंद भी नही उठा पाओगें। इसलिये आप रात 1 से 2 के बीच मुझे स्टोर रूम में मिलना पर मैंने कहा कि कविता मेरी तो अब इच्छा कर रही है तो उसने गेट बन्द करके मेरा लौडा अपने मुंह में लेकर चूसने लगी तथा लगातार चूसने के बाद में उसके मुह में ही झड गया और कविता ने मेरा पूरा वीर्य पी लिया और कहा कि आपका वीर्य बहुत नमकीन है मेरे पति ने मुझे कभी अपना वीर्य पीने नही दिया वो तो कभी मेरी चुदाई भी अच्छी तरीके से नहीं कर पाये। और वह मेरा पूरा लंड चाट–चाट कर साफ कर रही थी जिससे मेरे पूरे बदन मे एक मस्ती सी दौड रही थी बडी मुश्किल से मैंने अपने–आप पर काबू किया। उसके बाद कविता बोली कि अब मुझे तैयार होना है लडके वाले कभी–भी आ सकते है। इतना कह कर कविता वहां से चली गई।

मेहमान लगातार आ रहे थे मैं हाथ–मुह धो कर प्रोगाम के लिये तैयार हो रहा था तभी कविता मेरे पास आई और मेरा हाथ पकडकर मुझे अपने कमरे में ले गई तथा बोली आप बैठो में एक मिनट में नहाकर आई फिर कविता बिलकुल नंगी गीले बदन मेरे सामने आ गई मैंने उसका नंगा बदन देखा और देखता ही रह गया उसका बदन गठीला और इतना सैक्सी था कि बस पूछो मत उसके बुब्स बहुत गोल और बहुत ही सैक्सी लग रहे थे उसकी चूत हल्के–हल्के बालों के पीछे से जैसे मुझे अपने पास बुला रही थी। उसके गोरे बदन से टपकती बूदों को देख कर इच्छा कर रही थी इन बूदों को चाट जाउ उसके गीले खुले बाल देखकर ऐसी इच्छा कर रही थी कि इन में अपना लौडा दे दूं फिर मैं उसके पास आया और उसके गीले बदन को बुरी तरह से चुमने लगा तो वह बोली रोहित अभी नही रात को आप आना मैं आप को पूरा आनन्द दूंगी अभी तो मैं आप के हाथों से तैयार होना चाहती हूं फिर मैंने उसको चड्डी पहनाई उसके बाद ब्रा पहनाई उसके गीले बालों को संवारा उसके पेटीकोट पहनाया साडी पहनाई अपने हाथों से उसके गुलाबी सैक्सी होठो पर पहले बहुत जोर से किस की उसके बाद अपनी पसदीदा भूरे कलर की लिपिस्टक लगाई और लम्बा तिलक लगाया और उसके बाद उसको देखा तो बस पागल हो गया वह इतनी खूबसूरत और सैक्सी लग रही थी कि बस उसको वही पलग पर पटक कर चोद दूं। उसके बाद कविता मुझे से चिपक गई और मेरे लौडे को सहला कर नीचे हाल में चली गई। हाल में पार्टी शुरू हों चुकी थी लडके वाले आ गये थे। मैं भी थोडी देर में नीचे हाल में आ गया। कविता ने मुझे अपनी नन्द से मिलाया वह बहुत अच्छी लडकी थी।

पार्टी शुरू हो गई सगाई की रस्म चालू होने वाली थी इतनें में ही एक खूबसूरत और सैक्सी औरत ने आकर कविता को पीछे से पकड लिया कविता डर गई और बोली अरे आशा अब आऐ हो। कविता मुझसे बोली यह मेरी प्यारी देवरानी है। मैंने उसको देखा उसने मुझे देखा मैंने एक हल्की मुस्कान देकर उसका स्वागत किया और उसने भी एक सैक्सी मुस्कान देकर मेरा स्वागत किया और हम दोनों बातें करने लग गये कि आप का नाम क्या है क्या करते हो आदि। आशा ने अपने पति से भी मुझको मिलाया। सगाई की रस्म पूरी हो गई थी मेहमान लोग खाना खाने के लिये बाहर लॉन में आ गये थे आशा लगातार मुझ पर निगाहे रख रही थी और मैं बिना किसी की चिन्ता किये कविता के करीब आने के बहाने खोज रहा था और कविता भी मेरे करीब आने के बहाने खोज रही थी। हम सब भी खाना खाने के लिये बाहर चले गये मैंने कविता, आशा और आशा के पति ने एक साथ खाना खाया और बहुत सी मजाक की। कविता ने अपने देवर से कहा कि आशा को शादी

तक यही छोड जाना तो वह बोला हां क्यों नही भाभी। धीरे–धीरे सभी मेहमान चल गये बस हम घर वाले ही रह गये प्रोग्राम की थकान के कारण सब अपने अपने कमरे में जाकर सो गये पर मुझको नीद नही आ रही थी मुझको इन्तजार था 1 बजने का, और मेरा इन्तजार खत्म हुआ। 1 बजते ही मैं अपने कमरे से निकल कर स्टोर की तरफ भागा और जैसे ही स्टोर में घुसा और बोरियो के पीछे आया तो देखा कि वहां पहले से ही कविता बिस्तर और फूल बिछा कर मेरा इन्तजार कर रही थी और बोली इतना समय लगा दिया कब से आपका इन्तजार कर थी इतना कहते ही कविता मुझ पर लपकी और अपनी बाहों में लेकर बुरी तरह से मुझे चूमने लगी। कविता ने मेरा लौडा पकड लिया। इसके बाद कविता ने मेरी शर्ट उतार दी और मुझे पूरा नंगा कर दिया कविता ने मेरा हाथ अपने बूब्स पर रखा और कहा जोर–जोर से दबाते रहो प्लीज। मैने खूब जोर–जोर से बुब्स दबाये। कविता को मजा आ रहा था। फिर कविता ने अपनी साडी खोल दी। मेरे लौडे को कविता अपने हाथों से सहला रही थी मस्ती हम दोनों पर सवार होती जा रही थी उसके बाद कविता ने मेरा लौडा पूरा अपने मुंह में ले लिया और अपने मुंह को चोदने लगी तथा मैने तुरन्त उसको बिस्तर पर पटकर कर उसके बुब्स जो कब के आजाद होना चाहते थे आज़ाद करके उन पर टूट कर पडा कविता ने अपने गोल–गोल बुब्स के बीच मेरे लंड को रख दिया और अपने बूब्स की चुदाई करने लगी। कुछ देर बाद मैं कविता की चूत में उंगली डालने लगा। कविता के मुंह से सैक्सी आवाजें निकल रही थी आआआआहहहहहह ऊऊऊऊहहहहहह रोहित आआआआहहहह ऊऊऊऊहहहहहह जोर से रोहित आआहहहह मैं बहुत प्यासी हूं मेरी प्यास बुझा दो रोहित आआहहहह कविता ने कहा रोहित अब अपना लंड मेरी चूत में डालों, मेरी चूत प्यासी है चोदो मुझे चोदो मेरी प्यास बुझाओं फिर मैने कविता की दोनो टांगो को दोनो तरफ चौडाया और अपने लंड को कविता की चूत पर रखा जो अब तक बहुत टाईट हो चुकी थी। मैने हल्का सा धक्का दिया तो कविता की चीख निकल गयी और कविता बोली रोहित आराम से। फिर मैने हल्के–हल्के झटके लगाने शुरू कर दिये मेरे धक्को से कविता को मजा आ रहा था। कविता की आवाज निकल रही थी और डालो रोहित फाड दो इस चूत को तेज करो मैं और तेज हो गया। फिर कविता ने मुझे नीचे लेटा दिया और मेरे लंड पर अपनी चूत रख दी और जोर–जोर से उपर नीचे होने लगी मेरे लंड मे भी दर्द हो रहा था पर बहुत मजा आ रहा था। हम दोनो मस्ती में पागल हो चुके थे फिर मैने कविता को उठा कर नीचे लेटा दिया और उसकी टागे चौडा कर बहुत तेजी से उसकी चुदाई चालू कर दी। कविता बोली रोहित मैं झडने वाली हूं मेरा भी पानी निकलने वाला था मैने और तेज रफ्तार की तो 15–20 बीस मिनट के खेल के बाद मेरा गर्म वीर्य कविता की गर्म चूत में निकल गया। 15 मिनट तक हम नंगे एक–दूसरे पर पडे रहे। फिर मैने कविता को कहा कि मुझे उसकी गांड मारनी है तो कविता डर गई और बोली मैने आज तक गांड नहीं मरवाई सुना है इसमें बहुत दर्द होता है। मैने उसको समझाया तो वह मान गई। मैने कविता की खूबसूरत और मोटी गांड पर अपनी जबान फेर दी जिससे कविता एक दम चिला उठी आआआआहहहह और बोली रोहित प्यार से और मैने कविता को डोगी स्टाइल में करके उसकी गांड पर मेरा लौंडा रखा तो कविता बोली रोहित आराम से करना यह चूत नहीं गांड है बहुत दर्द होता है। मैने कहा कविता आप फ्रिक मत करो मैं बिलकुल आराम से करूंगा। कविता ने कभी गांड नही मरवाई थी जिसकी वजह से उसकी गांड बहुत टाईट थी इसलिये मैने अपने लौंडे पर तेल लगा लिया तथा जिससे मेरा लौंडा आराम से अन्दर जा सके। फिर मैने कविता की गांड मे हल्का से धक्का दिया, कविता को दर्द हुआ उसकी चीख निकल गयी आआआहहहहह बाहर निकालो नही तो फट जाएगी आआआहहहहहह नो रोहित प्लीज्जज्जज्ज आआहहहह ऊऊऊईईए बाहर निकालो। फिर मैने अपनी स्पीड हल्की कर दी। अब हल्के से मेरा पूरा लौंडा कविता की गांड में जा चुका था और कविता को मजा आ रहा था। काफी देर तक गांड मारने के बाद मैने कविता से कहा कि मेरा पानी निकलने वाला है तो वह बोली पानी अन्दर मत डालना मैं उसका रसपान करूंगी। फिर कविता ने मेरा पूरा पानी पिया और मेरा लंड चाट–चाट कर साफ कर दिया।

इसके बाद दोस्तो मैंने पूरी शादी में कविता को 10–15 बार चोदा और उसकी देवरानी आशा को भी चोदा उसकी चुदाई मैं आपको अगले भाग में बताउंगा। तो दोस्तों मुझे जरूर बताना आपको मेरी यह कहानी कैसी लगी। और आप मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं या कर सकती है लडकियों या भाभीयों तथा आटीयों का सम्पर्क गुप्त रखा जावेगा। मेरी ई–मेल है rohitlove43@yahoo.com **and jismforjism@gmail.com**